परिवर्तन
PARIVARTAN

कृषि संदेश
(रबी विशेषांक)

वर्ष 2017 (जुलाई-दिसम्बर) खंड 4 अंक 8

कृषि समुदाय के लिए तक्षशिला की एक पहल

सम्पादकीय कृषि मूलश्चः जीवनम्

कृषि मूलश्चः जीवनम्

सितम्बर-अक्टूबर में हुए बारिस से धान की संतोष जनक पैदावार प्राप्त हुई है तथा किसान भाई समय से रबी फसलो की बुआई की तैयारी में जुटे है। अच्छी उपज लेने के लिए फसलो के प्रभेदो का सही चुनाव करना होगा। उचित समय तथा विलम्ब से गेहूँ की बुआई के लिए हमें अनुमोदित प्रजातियों की पहचान एवं तकनीक का प्रयोग करना होगा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, रिसर्च काम्प्लेक्स पूर्वी क्षेत्र, पटना के शोध परिणाम के आधार पर गेहूँ की बुआई 19-25 नवम्बर के बीच में करने पर सबसे अधिक उपज (22.4 कुंतल/एकड़ अथवा 83 किलो/कठा) प्राप्त हुई है देर से बुआई करने पर प्रति सप्ताह क्रमशः उपज में गिरावट आती है। दलहनी तथा तिलहनी फसलो की बुआई अक्टूबर के प्रथम पखवारे में करना लाभप्रद होगा। वैश्विक स्तर पर दालों की कमी महसूस की जा रही है इस तथ्य को मद्दे नजर रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2016 को दलहन वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र, परिवर्तन किसानो को खेती की नवीनतम ज्ञान देने के लिए कृत संकल्प है। परिवर्तन किसान क्लब किसानो के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र पूसा से गेहूँ, सरसों, चना मटर एवं मसूर के उन्नतशील प्रजातियों के बीज मंगाकर किसानो को सुलभ करा रहा है। कृषि विभाग के सहयोग से परिवर्तन द्वारा जीरो टिलेज से गेहूँ की बुआई प्रदर्शन व्यापक स्तर पर किया जा रहा है।

आशा है कि परिवर्तन कृषि सन्देश का यह रबी विशेषांक कृषको, प्रसार कार्यकर्ताओं तथा कृषि से जुड़े लोगों के लिए उपयोगी साबित होगा।

अमरनाथ तिवारी

पैडी ट्रांस्प्लान्टर से धान की रोपाई का सफल प्रदर्शन

परिवर्तन प्रांगन में पालीथिन पर धान की महीन प्रजाति राजेंद्र स्वेता (अवधि 135—40 दिन) की नर्सरी तैयार करके पैडी ट्रांस्प्लान्टर द्वारा 2 जुलाई, 2016 को रोपाई की गई। इस मौके पर जिला कृषि पदाधिकारी श्री राजेंद्र वर्मा, आत्मा के प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री के के चौधरी तथा जीरादेई के प्रखंड कृषि अधिकारी श्री कामेश्वर प्रसाद तथा क्षेत्र के किसान उपस्थित थे। इस मशीन से 2.5—3 घंटे में एक एकड़ धान की रोपाई हो जाती है तथा सिर्फ 2 मजदूर खेत की रोपाई आसानी से कर लेते है। रोपाई लाइन में समान दूरी पर होती है तथा एक स्थान पर 2—3 पौधों की रोपाई होती है। इस प्रदर्शन में धान की उपज 50 किलोग्राम / कठा के हिसाब से प्राप्त हुई है। यह विधि जहां रोपाई हेतु मजदूरो की भारी समस्या हो काफी लाभदायक सिद्ध होगी। यह मशीन कृषि विभाग से अनुदानित दर पर प्राप्त की जा सकती है।

आई ए आर आई पूसा के सौजन्य से धान प्रजातियों का किसानो के खेत पर सफल प्रदर्शन

धान की दो प्रजातियों (पी यन आर 381 एवं सुगंधा 5) का जीरादेई एवं आंदर प्रखंड के 30 किसानो के खेतो पर प्रदर्शन आयोजित किया गया। इन प्रदर्शनों का मुख्य उद्देश्य यह है कि किसान अपने खेत पर स्थानीय दशा में अपने सीमित संसाधनों के अंतर्गत अच्छा उत्पादन दे रहे प्रजातियों का चुनाव कर सके तथा उन प्रजातियों को अपनाकर आस पास के किसान लाभान्वित हो सके। पी यन आर 381 (105–110– दिन) सूखा अवरोधी उपरवार खेतो के लिए तथा सुगंधा 5 (135– 140 दिन) महीन किस्म खलार खेत जहां पानी रुकता है के लिए किसानो की पसंद रही। इनका औसत उत्पादन क्रमशः 40–45 किलो/कठा एवं 50–55 किलो/कठा प्राप्त किया गया।

अरहर की पूसा ९ का रेज्ड बेड प्लान्टर से बुआई का सफल प्रदर्शन

अरहर की प्रजाति पूसा 9 की बुआई रेज्ड बेड प्लान्टर से की गई है। इस प्रदर्शन का उद्देश्य यह था की अरहर की फसल को अत्यधिक पानी से कोई नुकसान न हो तथा पौधे अपनी जरुरत के हिसाब से जल का उपयोग कर सके। समतल भूमि में बोई गई फसल से ऊँची उठी पट्टी पर बुआई करने से फसल के जड़ो, शाखाओं की अच्छी वृद्धि होती है तथा उपज ज्यादा प्राप्त होती है। वर्तमान में फसल खेत में लहलहा रही है तथा इसे देखकर लोग प्रभावित है।

परिवर्तन में मछ्ली प्रशिक्षण का आयोजन

मछली पालन – एक लाभकारी व्यवसाय पर एक दस दिवसीय ट्रेनिंग (28 जुलाई से 6 अगस्त, 2016) का आयोजन किया गया। पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की संख्या क्रमशः 23 एवं 7 थी। श्री मनीष कुमार श्रीवास्तव, जिला मत्स्य पदाधिकारी, सिवान ने फसलोत्पादन (धान–गेहूँ) एवं मछली पालन का तुलनात्मक आय–व्यय का व्योरा देकर बताया कि फसलोत्पादन से मछली पालन कई गुना लाभकारी है। समय से तालाब की सफाई, जुताई, गोबर के खाद का प्रयोग प्रति मास चुनाकरण तथा नियमित प्रतिदिन भोजन, तालाब में ऑक्सीजन की पूर्ति करने पर 8–9 माह में कम से कम एक लाख रुपया/एकड़ कमाया जा सकता है। श्री वर्मा मत्स्य विशेषज्ञ, सिवान ने बताया कि मछली की 2000 अंगुलिकाओं/एकड़ तालाब में डालनी चाहिए। तालाब का जल स्तर 1–1.5 मीटर रखना चाहिए। मछलियों को बाहरी चिड़ियों से बचाने हेतु ऊपर से सिल्वर जैसे चमकते हुए पट्टी लगाना चाहिए। मत्स्य विभाग के श्री राजू ने मछलियों में लगने वाले बिमारियों तथा उनके उपचार के बारे में जानकारी दिया। प्रशिक्षण में भाग ले रहे श्री ननजी यादव, श्री प्रदुमन सिंह, श्री सुनील कुमार सिंह, श्री कमल देवी, श्री राजवती, पिंकी ने ट्रेनिंग में दी गई जानकारी के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किये। श्री पशुपति पांडे ने पुराने तालाबो के जीर्णोद्धार हेतु सरकारी अनुदान की बात की। रंगीन मछली पालने के बारे में भी जानकारी दी गयी तथा इसे कम खर्च में एक अच्छा आमदनी का स्रोत बताया गया। महिला कृषको के लिए यह अच्छा धंधा साबित होगा। मछली की एक पीस पर कम से कम 10/– का फायदा होगा। मत्स्य पदाधिकारी ने नए तालाब खुदवाने, चौर भूमि के लिए पम्पसेट, टूबवेल, मत्स्य बीज हेचरी, मत्स्य बीज वितरण योजना आदि पर विस्तृत जानकारी दी। शासन द्वारा अनुदान प्राप्ति के लिए भूमि स्वामित्व प्रमाण पत्र, लगान रसीद, भूमि का नकशा ,खसरा, पहचान पत्र, बैंक का कर्ज न होने का प्रमाण पत्र की आवश्यकता होगी। प्रशिक्षण समापन दिनांक 6 अगस्त को संपन्न हुआ जिसमे 22 प्रशिक्षनार्थियों को प्रमाण पत्र दिया गया। परिवर्तन के कृषि वैज्ञानिक डॉ तिवारी ने धन्यवाद प्रस्ताव करने के साथ साथ यह आह्वान किया कि अगले प्रशिक्षण के समय किसानो को सफल मछली पालको के मछली पालन का कार्य उनके यहां ले जाकर दिखाने का प्रावधान किया जाये। ट्रेनिंग को और अधिक व्यावहारिक बनाने के लिए पानी की जाँच तथा प्रोजेक्टर की सहायता से मछली पालन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की आवश्यकता पर बल दिया।

किसान चौपाल - एक अनूठा पहल

परिवर्तन कार्य क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी 45 गांवों में किसान चौपाल का आयोजन किया जा रहा है। गाँव के किसी सार्वजनिक स्थान पर किसानो के बीच में बैठकर परिवर्तन के वैज्ञानिक खेती – बारी की सामयिक चर्चा, कम लागत की खेती, फसल सुरक्षा, उत्पादकता बढाने के उपायों पर चर्चा करते हैं। रासायनिक खरपतवार नियंत्रण में प्रयोग किये जाने वाले रसायनों की मात्रा, छिड़काव में सावधानियों पर भी चर्चा की जाती है तथा किसानो के पूछे गए सवालों का जबाब दिया जाता है। इस कार्यक्रम से किसानो तथा वैज्ञानिको के बीच नजदीकी बढ़ रही है तथा किसान बिना किसी झिझक के अपनी बात करते हैं तथा तकनिकी ज्ञान से लाभान्वित हो रहे है। इस कार्यक्रम से एक महत्वपूर्ण लाभ यह होता है कि हमें किसानो का फीडबैक भी मिल जाता है। ऐसा प्रयास है कि रबी तथा खरीफ में प्रत्येक गाँव में एक बार वैज्ञानिक–कृषक संवाद अवश्य आयोजित हो जाये। गत 6 महीनो में 21 गांवों में कृषि चौपाल का आयोजन किया जा चुका है।

सहयोगी संस्थाएँ
सीरियल सिस्टम इनिसिएटीव् फॉर साऊथ एशिया पटना
बयोवार्सिटी इन्टरनेशनल फॉर साऊथ एशिया नई दिल्ली
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र पूसा, समस्तीपुर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद रिसर्च कॉम्पलेक्स पूर्वी क्षेत्र पटना
कृषि विभाग आत्मा एवं संबंधित विभाग, सिवान।

परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास
नरेन्द्रपुर जीरादेई सिवान

संपर्क सूत्र
डा० अमरनाथ तिवारी
कृषि सलाहकार
+91 - 7759863367
amarnath.tewari@takshila.net

परिवर्तन - पाली हाउस से बेमौसमी सब्जी के पौध लेकर किसान लाभान्वित

परिवर्तन पाली हाउस में गुणवत्ता वाले संकर फूलगोभी,टमाटर, मिर्च, वैगन एवं प्याज आदि के पौध तैयार किये जा रहे है तथा किसान इससे लाभान्वित हो रहे है फूल गोभी, बैगन, मिर्च, बरसाती प्याज, टमाटर के पौध किसानो ने परिवर्तन से लेकर अपने खेतो में रोपाई की तथा उससे काफी मुनाफा कमाया। पाली हाउस में बेमौसमी सब्जी के पौध तैयार करके किसान भाई स्वयं यह व्यवसाय कर अच्छी कमाई कर सकते हैं इस व्यवसाय को करने के लिए बिहार सरकार अनुदान भी देती है।

बी टी कपास की खेती देखकर किसान उत्साहित

दिनांक 16 नवम्बर, 2016 को गरार एवं आसपास गाँव के कुल 18 किसानो ने बी टी कपास की फसल के प्रदर्शनों को देखा तथा उस पर अपनी जिज्ञासा भरे सवाल पूछे। कपास की रुई के गुणवत्ता का भी आंकलन किया। वर्षा आधारित कपास, अरहर की सहफसली खेती के प्रदर्शन पर उनका झुकाव ज्यादा था। कारण सिंचित अवस्था में कपास की बुआई मई के महीने में सिंचाई जल के अभाव में संभव नहीं है। इस बी टी कपास की फसल में किसी कीटनाशको का छिड़काव नहीं किया था तथा फसल रोगमुक्त भी थी।

तोरी पी टी ३०३ के बाद गेहूँ की बुआई संभव -

किसान भाई एक वर्ष में तीन फसले –मक्का–तोरी–गेहूँ आसानी से उगाकर धान–गेहूँ /मक्का–गेहूँ की अपेक्षा ज्यादा पैसा कमा सकते हैं। मक्का की सितम्बर मध्य में कटाई करके तुरंत तोरी प्रजाति पी टी 303 की बुआई करे। तोरी की यह प्रजाति 95–100 दिनों में तैयार हो जाती है इस प्रकार तोरी की दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में कटाई करके गेहूँ की सुगमता पूर्वक फसल ली जा सकती है।

परिवर्तन परिसर में तोरी प्रजाति पी टी 303 प्रदर्शन की कटाई करके गेहूँ की बुआई दिसम्बर के दूसरे– सप्ताह में संभावित है।

कृषि विभाग के सौजन्य से परिवर्तन क्षेत्र के किसानो के खेत पर जीरो टिल मशीन से गेहूँ की बुआई

वर्तमान वर्ष 2016–17 में कृषि विभाग के सहयोग से जीरादेई तथा अंदर क्षेत्र के किसानो के खेत पर 200 से ऊपर किसानो के यहां गेहूँ की बुआई जीरो टिल मशीन से की गयी है। गेहूँ का जमाव बहुत अच्छा है तथा किसान इस पद्धति से बुआई करके लागत में कमी महसूस कर रहे है।

आई ए आर आई पूसा की गेहूँ मिनीकिट प्रजातीय ट्रायल आयोजित

आई ए आर आई पूसा की गेहूँ मिनीकिट प्रजातीय ट्रायल (समय से बुआई हेतु गेहूँ की यच डी 2967, यच डी 2733 तथा यच डी 2824 एवं देर से बुआई हेतु यच आई 1563 एवं यच डी 3118) जीरादेई तथा आंदर प्रखंड के 28 किसानो के खेत पर आयोजित किया गया है। इस प्रदर्शनों का भी यही उद्देश्य है कि किसान स्थानीय दशाओं में अपनी सिमित साधनों से समय पर तथा विलम्ब की दशा में अपने खेत पर ही गेहूँ बोकर प्रजातियों का चुनाव कर सके तथा चुने हुए प्रजातियों के बीजो का वितरण अपने आसपास के किसानो को कर सके।

देर से बोये गेहूँ की अच्छी उपज लेने के टिप्स -

- बुआई जीरो टिल मशीन से करना लाभकारी होगा। समय तथा जुताई के खर्च में बचत हो जाती है। जमाव जल्दी तथा अच्छा होता है।
- बुआई बीज की मात्रा डेढ़ से बढ़ाकर दो किलो /कठा कर देनी चाहिए।
- देर से बुआई के लिए संस्तुत प्रजाति –यच डब्लू 2045, पी बी डब्लू 373, यच डब्लू 234, यच डी 2285, यच आई 1563, यच डी 3118 आदि की बुआई करे।
- देर से बुआई की स्थिति में डी ए पी की मात्रा बढ़ाकर ढाई किलोग्राम/कठा कर देनी चाहिए।
- जीरो टिल मशीन से बुआई करने पर पहली सिंचाई 15–20 दिन के बीच करना अच्छा होता है।

चना - सरसों की सहफसली खेती - एक नया आयाम

शोध परिणाम बताते हैं की चना की 4 पंक्तियों के बाद एक पक्ति सरसों की बुआई करने से चने की अच्छी उपज के साथ सरसों की भी उचित पैदावार मिल जाती है। परिवर्तन परिसर में चना तथा सरसों की सहफसली खेती का प्रदर्शन का अवलोकन किया जा सकता है

सुधांशु कुमार ने किसानो को फलोत्पादन के गुर सिखाये

सुधांशु कुमार एक प्रगतिशील कृषक समस्तीपुर के रहने वाले है आम– लीची के उत्पादन तथा मार्केटिंग में बहुत लम्बा अनुभव है दिनांक 23 अक्तूबर, 2016 को परिवर्तन प्रांगण में क्षेत्र के किसानो को संबोधित किया तथा फल उत्पादन में ध्यान देने हेतु अपने टिप्स दिए। उनका कहना था कि आम – लीची में कटाई– छटाई का बड़ा महत्व है। इस क्रिया से सूर्य की रोशनी पेड़ के निचली सतह तक तथा

चारो ओर मिलता है। इससे फलत अच्छी होती है। पुराने पेड़ों के रिजुविनेसन (जीर्णोद्धार) के बारे में भी समझाया। इस क्रिया से पुराने पेड़ों में भी पर्याप्त फल लगने लगते हैं। आन लाइन की सुविधा से फलों की बिक्री के लाभ पर चर्चा किया। फलो में संतुलित पोषक तत्वों के प्रबंधन पर जोर दिया।

दिल्ली पब्लिक स्कूल पटना के छात्रों ने खेती-किसानी का जायजा लिया-

दिल्ली पब्लिक स्कूल के छात्र अपने रूरल इमर्जन प्रोग्राम के अंतर्गत दिनांक 22 अक्तूबर से 28 अक्तूबर तक परिवर्तन प्रांगण में प्रवास किया तथा दिनांक 27 अक्तूबर को प्रातः हरियाली कृषि ज्ञान के अंतर्गत चल रहे विभिन्न प्रदर्शनों – तोरिया पी टी 303 की फसल, अरहर पूसा 9 की मेंढ़ पर बुआई प्रदर्शन तथा बी टी कपास के साथ अरहर की सहफसली खेती का जायजा लिया तथा कई प्रश्न पूछे जिसका उत्तर देकर उनको संतुष्ट किया गया।

इसके उपरांत सभी छात्र बड़हुलिया टोला गए तथा एक किसान चौपाल लगाकर किसानो से बातचीत की। किसानो ने खेती में हो रहे नील गाय तथा वनसुअर से नुकसान के बारे में बताया तथा खेती–किसानी में मजदूरो की समस्या, महंगी सिंचाई एवं खेती में बढ़ते हुए लागत के बारे में अपने विचार रखे, साथ ही साथ प्रशासन पर कृषि एवं ग्रामीण विकास विभाग की तरफ से पूर्ण सहयोग न मिल पाने से अपने कष्टों का इजहार कराया। मंजू देवी महिला कृषक का कहना था कि श्री बशिष्ठ सिंह तथा जयराम जी परिवर्तन जाते हैं तथा वहां के बारे में हम लोगो को नहीं बताते। सम्पति देवी ने आंगन बाड़ी खोलने की मांग उठाई। पटना से आये अध्यापको तथा छात्र सुश्री तेजस्विता तन्मय तथा सुश्री आर्यन कश्यप ने भी अपने विचार रखे।

क्या आप जानते हैं–

- मशरुम एक स्वादिष्ट एवं पौष्टिक शुद्ध शाकाहारी भोजन है, 100 ग्राम ताजा मशरूम में 3.1 ग्राम प्रोटीन, 0.8 ग्राम वसा, 4.3 ग्राम कार्बोहायड्रेट, 0.8 ग्राम रेशा, 6 मि.ग्रा. कैल्सियम, 110मि. ग्रा. फॉस्फोरस, 1.5 मिलीग्राम लौहतत्व, 12मि.ग्रा. विटामिन सी और 90% नमी पाई जाती है।
- मशरूम के विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे–मशरूम आमलेट, पकौडा या बिरयानी, अचार, सूप तथा सब्जी के लिए भी किया जा सकता है।
- आहार विशेषज्ञों के अनुसार, व्यक्ति को प्रतिदिन अपने भोजन को पौष्टिक व संतुलित बनाने के लिए 100–125 ग्राम पत्तेदार सब्जियां, 85–100 ग्राम जड़ तथा कन्द वाली सब्जियां तथा 80–100 ग्राम अन्य प्रकार की सब्जियां खानी चाहिए।
- विश्व भर में दालों के उत्पादन एवं उपभोग के प्रति लोगो में जागरूकता बढाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संगठन ने वर्ष 2016 को दलहन अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया है।
- वर्ष 1951 में प्रति व्यक्ति दालों की उपलब्धता 60 ग्राम थी जो वर्ष 2010 में घटकर 34 ग्राम के आसपास आ गई। विश्व स्वास्थ संगठन के अनुसार प्रति व्यक्ति प्रति दिन 80 ग्राम दालों की संस्तुति की गई है।
- राष्ट्रीय स्तर पर एक अध्ययन से ज्ञात हुआ है फसल की कटाई के उपरांत 3.9–6.0 % अनाज, 5.8–18% तक फल–सब्जियां, 2.8–10.1 % तक तिलहन, 4.3–6.1 % तक दलहन नष्ट हो जाता है। इसे बचाकर हम अपनी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं।

किसान भाई ध्यान दे–

- धान की कटाई के पश्चात साफ सुथरा खेत में पर्याप्त नमी की दशा में जीरो टिल मशीन से गेहूँ की बुआई करनी चाहिए।
- यच डी 2967, यच डी 2733 यच डी 2824 प्रजाति अधिक उत्पादन लेने के लिए उपयुक्त पाई गयी है।
- जीरो टिल से बुआई करने पर २ किलोग्रम डी ए पी मशीन से देना चाहिए।
- शोध परिणामो से सिद्ध हो चुका है कि गेहूँ की बुआई 25 नवम्बर के बाद करने से 500–600 ग्राम कठा/दिन उपज में कमी आती है।
- गेहूँ में पहली सिंचाई शीर्ष जड़ निकलने की अवस्था, दूसरी गांठ बनने तथा तीसरी सिंचाई दूध आने की अवस्था पर करना चाहिए।
- राइ–सरसों की बुआई 15–25 अक्तूबर में करने पर अच्छी उपज प्राप्त होती है। 250 ग्राम सल्फर/कठा का प्रयोग करने से तिलहनी फसलो की उपज तथा तेल की मात्रा बढ़ जाती है।
- चने की प्रजाति के. 850, राधे, उदय, पूसा चमत्कार, पूसा 212 आदि उकठा अवरोधी है।
- मसूर की मल्लिका (के 75) तथा अवतार एवं पन्त 406 की बुआई नवम्बर के मध्य तक करने से उचित पैदावार मिलती है तथा ये प्रजाति उकठा अवरोधी है।

किसानों की बातें, उनकी जुबानी

संबोधन

मेरा नाम ऋषिकेश है तथा गोंठी गाँव का रहने वाला हूँ। परिवर्तन से बरसाती प्याज तथा फूल गोभी के पौधे लाकर अपने खेत में रोपे थे तथा फूल गोभी बाजार में ले जाकर 40–50/रूपया किलो के हिसाब से बेचा। मुझे 10 धुर खेत (आधा कठा) में 1000 रुपया का लाभ मिला। अब उस खेत में हमने बरसाती प्याज लगाया हैं है। प्याज देखकर अब गाँव के लोग चकित हो गए तथा पहले विश्वास नहीं करते थे। एक प्याज की गांठ 100–150 ग्राम तक बैठा है

ऋषिकेश गाँव गोठी

परिवर्तन में पिछले साल बरसाती प्याज की फसल देखकर बीज लाया लेकिन उसका जमाव उचित नहीं हुआ। इस बार परिवर्तन पाली हाउस से बरसाती प्याज का पौध लिया तथा अपने खेत में लगाया हूँ मुझे लगता है कि इस प्याज में लागत कम है तथा गर्मी वाले प्याज से इसकी उपज तिगुनी होगी उस प्याज में हर हफ्ते पानी देना पड़ता लेकिन यह बरसात समाप्त होते ही इसकी गांठ बढ़ने लगता है। इसमें खर्च कम तथा लाभ ज्यादा होने का अनुमान है परिवर्तन के जीरो टिल मशीन से गेहूँ बोया है उसमे भी बचत बहुत है तथा जमाव अच्छा है।

लक्ष्मी नारायण सिंह ,नरेन्द्रपुर

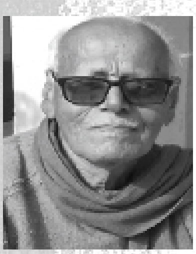

परिवर्तन से लगभग दो साल से हम लोग संपर्क में है एक बार हमारे खेत में मशीन से धान की रोपाई हुई थी तथा अच्छा धान हुआ था। धान की एक प्रजाति सुगंधा 5 का ट्रायल किया था जो बहुत महीन खाने में अच्छा तथा उपज भी ज्यादा था इस प्रजाति को हम लोग खूब पसंद किये हैं तथा आगे भी इसकी खेती करने के लिए सोचते हैं। परिवर्तन से हम लोग यूरिया तथा डाई खाद तथा कीट नाशको को भी लेते हैं जो उचित दाम पर मिलता है तथा उसमे मिलावट का अंदेशा नहीं होता है गाँव में भी लोगो को परिवर्तन से फायदा उठाने के लिए कहते हैं।

रामेश्वर सिंह, बंगरा उज्जैन

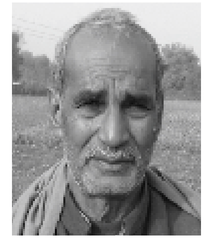

परिवर्तन से हमें खेती के नए तरीके जिसमे लागत कम लगती है सिखाया गया है पहली तो धान की सीधी बुआई हम कर रहे है क्योंकि इसमें लेबर नहीं लगते हैं तथा मई–जून में धान की नर्सरी नहीं तैयार करनी पड़ती है तथा उपज भी ठीक–ठाक मिल जाता है अब परिवर्तन के मशीन से गेहूँ की बुआई करने लगे है इसमें जुताई का खर्च बच जाता है तथा पैदावार ठीक मिल जाती है कुल मिलाकर लागत कम है तथा हमारे गाँव में भी देखकर जीरो टिल मशीन से गेहूँ बोना शुरु कर दिया है

श्री राम भगत, बलईपुर

परिवर्तन से पिछले साल पूसा तारक सरसों का बीज लेकर 23 कठा में बुआई किया था मुझे 9 कुंतल सरसों पैदा हुआ था सिर्फ एक सिंचाई किया था तथा कोई कीटनाशक भी नहीं डाला था तथा इस साल भी मैंने इसी पूसा तारक की बुआई की है तथा मुझे अच्छी उपज मिलेगा इस बार मेरा खेत देखकर बहुत लोगो ने इसकी बुआई की है गेहूँ की बुआई भी मैंने परिवर्तन के जीरो टिलेज मशीन से किया है तथा जुताई, बीज तथा सिंचाई के घंटे में बचत हुआ है

पप्पू सिंह ,नरेन्द्रपुर

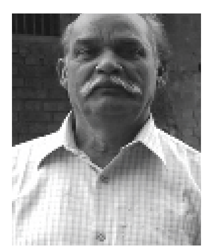

मै रिटायर होकर गाँव में खेती करना शुरु किया हूँ लगभग एक साल से परिवर्तन से मेरा जुडाव हुआ है तथा इस बीच मुझे खेती की तकनीक सीखने का मौका मिला तकनीक के साथ साथ परिवर्तन के पाली हाउस से राजेंद्र बैगन –2, टमाटर, बरसाती प्याज का पौधा लेकर अपने खेत में रोपे है बरसाती प्याज का तो कोई जोड़ ही नहीं है इसे तो बिजनेस के लिए करना होगा क्योंकि इसमें गर्मी वाले प्याज से पैदावार चौगुनी मिलेगी पानी लगता नहीं गर्मी में तो हर हफ्ते पानी देना पड़ता है निकाई गुड़ाई करनी पड़ती है अगले साल इसकी हम तथा हमारे गाँव के लोग ज्यादा खेती करेंगे परिवर्तन किसान क्लब से हमें कीटनाशक तथा शुद्ध बीज मिल जाता है। किसान भाइयों को परिवर्तन से जुड़ना होगा।

बशिष्ठ नारायण सिंह, बड़हुलिया टोला

Design & Production : imagica graphics